REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

# पर्यावरण संरक्षण आन्दोजन में विश्नोई महिलाओं का योगदान

डॉ. विजय कुमार
सहायक आचार्य, स्व. पं. न. कि. श. राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा.

## परिचय :

पर्यावरण दो अवयवों से मिलकर बना है :–
(1) जैविक पर्यावरण (2) अजैविक पर्यावरण

जैविक पर्यावरण में जन्तु, पौधे, समुद्र जीव आते है तथा सभी अजैनिक पर्यावरण में पानी, भूमि, हवा आदि अजैविक तत्व आते है अर्थात् पर्यावरण में उपस्थित इन तत्वों को संतुलित व संरक्षित रखना ही पर्यावरण संरक्षण है पर्यावरण को संतुलित व संरक्षित रखने में जीव–जन्तु व पेड़–पौधों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनके महत्व को स्वीकार करते हुये प्राचीन भारत में आज तक इनको संरक्षित रखने की बात कही जाती रही है हमारा प्राचीन साहित्य तो इनके महत्व व संरक्षण की बातों से भरा पड़ा है। यथा पर्यावरण को संरक्षित रखने के लिए हमारे वैदिक मंत्रों में कहा गया है।

ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

अर्थात् मानव अपनी इच्छाओं को वश में रखकर प्रकृति से उतना ही गृहण करें कि उसकी पूर्णता को क्षति नहीं पहुँचे।

यजुर्वेद में कहा गया है –
धानां लेखीरन्तरिक्ष ना हि. सीः पृथिका संभर्व
अभं छिवा स्वछिं तिस्ते तिंजनः
प्राणिताप पहले सौभागाय
अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्सो
विरोह सहस्त्रंवल्शा विवयं रूहम।।

अर्थात वृक्षों को न काटो। जल और पृथ्सी की रक्षा करना धर्म है पृथ्वी से उतना ही भाग निकालो, जिसकी पूर्ति की जा सके। ऋग्वेद में तो यहां तक कहा गया है कि पृथ्वी वृक्ष से उत्पन्न हुई है।

भू अज्ञे उत्तानपदः

इन जैनिक तत्वों का दुरूपयोग न हो इसीलिये इन्हें धार्मिक भावना/धार्मिक आस्था से जाड़ा। इन्हें देवता तुल्य माना गया। ब्रह्मपुराण में लक्ष्मी को वन वासिनी कहा गया। वहीं भगवान कृष्ण गीता में अपने को औषधि कहते है और वृक्षों में पीपल/पीपल के पत्ते–पत्ते पर तो देवताओं का निवास माना गया। तो तुलसी व

मरवा से युक्त घर को शुभ माना गया है। भारतीय इतिहास में पशुओं को भी पूज्य माना गया। गाय की हत्या तो सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में वर्जित रही है।

सैंधव संस्कृति से भी हमें कुछ उदाहरण प्राप्त हुये है जिससे वृक्षों एवं जीव–जन्तुओं की महत्ता स्पष्ट होती है। यहॉ से प्राप्त मृणपात्रों पर स्त्री की नाभि से लताएं निकलती हुई चित्रित हुई हैं, एक मुहर पर स्त्री को पैर फैलाए हुए तथा उसके गर्भ से पादप निकलते हुए दिखाया गया है यह सम्भवतः मातृ शक्ति के रूप में पृथ्वी माता का अंकन है। एक अन्य मुहर पर पीपल की दो शाखाओं के बीच स्त्री आकृति दिखाई गई है इन मुहरों से मातृदेवी की प्रधान शक्ति का प्रदर्शन हुआ है। इससे अतिरिक्त तीन मुखों वाले पुरूष देवता की मुहर मिली है जिसके चारों और पशु–हाथी, चीता, महिष और गैड़ा अंकित है और आसन के नीचे हिरन की आकृति बनी हुई है इन सब मुहरों से यही विदित होता है कि सैंधव लोग वृक्ष व जीव–जन्तुओं को पवित्र मानकर पूजा करते थे।

बाद में भारतीय धर्म–वैदिक धर्म, जैन धर्म, बौध धर्म आदि तथा चक्रवर्ती सम्राटों के समय भी पशु–पक्षियों व वृक्षों के महत्वपूर्ण मानकर पूजा जाता रहा है और इनको संरक्षित रखने का प्रयास किया जाता रहा है। जैन धर्म व बौद्ध धर्म में तो अहिंसा का सिद्धान्त ही जीवरक्षा के लिए है। वही चक्रवर्ती सम्राटों जैसे की अशोक आदि ने तो जीव हत्या का निषिद्ध कर दिया था और सड़कों के किनारे छायादार वृक्ष लगवाये थे।

अर्थात् भारतीय ऐतिहासिक समाज जीव रक्षा व वृक्ष को संरक्षित रखने की कथाओं व कथनों से भरा पड़ा है। लेकिन इतिहास में विश्नोई समाज को छोड़कर ऐसा किसी भी तरह का उदाहरण हमें नहीं मिलता। पर्यावरण को संरक्षित रखने या जीव रक्षा व वृक्षों की रक्षा के लिए किसी ने अपना जीवन दाव पर लगाया हो। इस तरह का साहस हमें सिर्फ विश्नोई समाज के लोगों में देखने को मिलता है जिन्होंने हँसते–हँसते जीव रक्षा व वृक्ष रक्षा के लिए प्राण प्राणों का बलिदान दिया। इनमें भी विश्नोई महिलाओं का योगदान प्रमुख है जिन्होंने सबसे पहले वृक्ष रक्षा के के लिये अपने प्राणों को न्यौंछावर किया।

## विश्नोई कौन ?

विश्नोई लोग राजस्थान के गाँवों में रहने वाले सीधे–साधे प्रकृति उपासकों का समुदाय है जो अपने गुरू जाम्भोजी की शिक्षाओं के आधार पर अपना जीवन यापन करते है। ये लोग जाम्भोजी के इतने भक्त है कि इनकी शिक्षाओं का धर्मस्वरूप पालन करते हुए अपने जीवन का भी त्याग कर देते हैं।

जाम्भोजी का जन्म 1508 में भादो वदि अष्टमी को नागौर से लगभग पचार किलोमीटर उत्तर में पीपासर गॉव में हुआ था इन्होंने 1542 में पवित्रता, अहिंसा, सदाचार एवं उपासना से संबंधित 29 नियमों की आचार संहिता देकर विश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना की थी। ये उन्तीस नियम इस प्रकार थे –

1. तीस दिन कह जच्चा घर को कोई भी कार्य न करें।
2. पाँच दिन तक राजस्वला स्त्री गृह कार्य से पृथक रहे।
3. प्रातः काल स्नान करें।
4. शील का पालन करें।
5. बाहरी एवं आंतरिक पवित्रता रखें।
6. प्रातः सायं संध्या वन्दना करें।
7. संध्या को आरती एवं हरिगुण गान करें।
8. प्रेमपूर्वक हवन करें।
9. पानी, वाणी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग करें।
10. क्षमा एवं दया को धारण करें।
11. चोरी न करें।
12. निंदा न करें।
13. झूठ न बोले।
14. वाद–विवाद न करें।
15. अमावस्या का वृत रखें।
16. विष्णु का जप करें।
17. प्राणी मात्र पर दया करें।

18. हरे वृक्ष न काटे।
19. काम, मद, लोभ एवं मोह आदि को अपने वश में रखें।
20. रसोई अपने हाथों से बनायें।
21. थाट अमर रखें।
22. बैल को खसी (नपुंसक) न करें।
23. अमल न खावें।
24. तम्बाकू का सेवन न करें।
25. भांग न पीवें।
26. मांस न खावें।
27. मदिरा न पीवें।
28. नीले वस्त्र का उपयोग न करें।

29 नियम व विष्णु उपासक होने के कारण जाम्भोजी के भक्तों को विश्नोई कहा गया। स्वयं जाम्भोजी ने अपने जीवन में इन 29 नियमों का पाल करते हुये विशेष रूप से जीव रक्षा व वृक्ष रक्षा को अपने जीवन का आधार बनाया। इन्होंने वृक्षारोपण करके लोगों में वृक्ष प्रेम जागृत किया। भ्रमण करते हुए लोदीपुर (उत्तर प्रदेश) में खेजडी का एक वृक्ष लगाया, रोटू गॉव में वृक्षों के अभाव को देखकर वहाँ खेजड़ी का एक बाग लगाया। खेजड़ी राजस्थान का कल्पवृक्ष माना जाता है क्योंकि यह पेड़ बहुउपयोगी है इसकी जड़, पत्ते, छाल, टहनी सभी उपयोगी है इस पेड़ के लिये पानी की आवश्यकता भी कम होती है। यह विशेषकर पश्चिमी राजस्थान (थार) का प्रमुख पेड़ है। इसे वैज्ञानिक भाषा में सिनेरियो (Prosposis) कहा जाता है। इस वृक्ष प्रजाति में भी orans का विशेष स्थान है जिसकी अपनी विशाल परिस्थिकी मूल्य के लिये पूजा की जाती है ये पेड़ पशुओं के चरने और पक्षियों के भीड़ के लिए स्थानीय रूप से Orans के रूप में जाने जाते है। इसकी पत्तियो में विटामिन की मात्रा अत्यधिक होती है जो जानवरों के लिए विशेष उपयोगी है।

खेजड़ी का पेड़

जाम्भोजी ने पर्यावरण शुद्धि के लिए हवन पर भी विशेष बल दिया क्योंकि होम पर्यावरण शुद्धि में विशेष रूप से सहायक है होम की अग्नि से वातावरण में व्याप्त प्रदूषण दूर होता है।

'होम हित चित प्रीत सूं होय, बास बैकुण्ठ पावो'

इसकी उपयोगिता वैज्ञानिक युग में भी सिद्ध हो चुकी है इसके अतिरिक्त जाम्भोजी ने मृतक को जलाने की अपेक्षा गाड़ने पर बल दिया ताकि वृक्षों की कटाई बच सके और मृतक के जलने से दूषित होने वाला पर्यावरण बच सके।

जाम्भोजी के बाद उनके अनुयायीयों ने जीवदयां पालणी (लीवों के प्रति दया रखो व रूंख लीलो नहिं घावें (हरे पेड मत काटो) को मूल मंत्र मानते हुये अपने जीवन का आधार बना लिया और इनकी रक्षार्थ हेतु अपने जीवन का बलिदान किया।

## जीव रक्षा एवं विश्नोई महिलायें

इन मूल मंत्रों का पालन करने में विश्नोई महिलाओं की भूमिका विशेष उल्लेखनीय हैं। जीवों के प्रति इनका मातृत्व प्रेम तो विशेष उल्ल्खनीय है विश्नोई महिलायें हिरणों के अनाथ बच्चों को दूध पिलाकर पालती रही है इसी संदर्भ में नाढ़ोड़ी गॉव की घटना 10 मई 1978 को जिला हिसार के नाढ़ोड़ी गॉव में कुछ शिकारी हिरणों का शिकार करते हुए वहॉ पहुॅच गये। शिकारियों के भय से एक हिरणी अपने नवजात शिशु से बिछड गई। इसी नवजात शिशु को नाढ़ोड़ी गॉव की श्रीमती **रामीदेवी विश्नोई** उठाकर अपने घर ले गई और उसे अपना स्तनपान कराकर अपने बच्चे की तरह ही पालन पोषण किया।

आधुनिक युग में जब माताएं अपने बच्चों को ही अपना दूध पिलाने में हिचकती है ऐसे वातावरण में श्रीमती रामीदेवी का यह त्याग विश्व में अनुपम ही है।

इसी तरह 1980 में मेहराणा की **शारदा विश्नोई** ने अपनी हिम्मत एवं जीव दया की भावना से प्रेरित होकर शिकारियों को गोली मारकर घायल कर दिया और हिरणों को बचा लिया।

धांगड़ की श्रीमती **परमेश्वरी विश्नोई** भी अपना दूध पिलाकर हिरण के बच्चे को बचाने में सफल रही।

## वृक्ष रक्षा व महिलाऐं

वृक्ष रक्षा के कार्य में भी स्त्रियॉ पुरूषों से आगे रही। वृक्ष रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करने की सर्वप्रथम घटना वि. सं. 1661 जेठ वदि दूज, शनिवार को जोधपुर राज्य के गॉव रेवासड़ी (रामासड़ी) में घटित हुई। रेवासड़ी की श्रीमती करमां एवं श्रीमती गोरां विश्नोई ने अपने प्राण न्यौछावर किये। **रामासड़ी गॉव** में खेजड़ी के बहुत से वृक्ष थे इन वृक्षों को काटने के उद्देश्य से गॉव का ठाकुर अपेन कारिन्दो को लेकर वहॉ पहुँच गया। अचानक इस स्थिति को देखकर सभी लोग किमकर्तव्यविमूढ़ हो गये। पुरूष अलग–अलग समूह बनाकर इस समस्या पर चर्चा करने लगे कि किस तरह से वृक्षों की रक्षा की जाय? शक्ति से ठाकुर का मुकाबला करना कठिन था और प्रार्थना सुनने के लिए ठाकुर तैयार नहीं था इसी समय विश्नोई समाज की महिला **श्रीमती करमां** ने अपने सखी **श्रीमती गौरां** को बुलाकर कहा –

करमणी गौरां लिवी बुलाय, ओ अवसर छै आपणों
आपणों अवसर राम गौरां, लिखी कलम सोहनिं मिटै
जाय चौहटे शीश मांडयो, लिखी स्याही ना मिटै।

यह हमारे धर्म पालन का अवसर है गौरां भाग्य का लेख अमिट है हमें इस अवसर का लाभ उठाना है।

कमरां अपनी सखी गौरों को अपने साथ लेकर वृक्ष काटने वालों के सामने पहुंची और उन्हें ललकारा। पर करमा की ललकार का कारिन्दों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वृक्षों के बचाव का जब कोई अन्य उपाय नहीं दिखाई नहीं दिया तब उन दोनों ने अपने शीश न्यौछावर करके वृक्षों को बचाने का निर्णय ले लिया। शत्रुओं ने बिना सोचे–समझे रामसड़ी के चौराहे पर करमणी एवं गौरा के शीश पर तलवार चला दी। करमां व गोरां के इस बलिदान का उल्लेख हमें बील्होजी की रामासड़ी की साखी में मिलता है।

श्रीमती करमां एवं गौरा के आदर्श को अपनाकर जोधपुर राज्य के **तिलासणी गॉव** में श्रीमती खींवणी खोखर, श्री **मोटा जी** खोखर एवं श्रीमती नैतू नैण ने अपने प्रणों की बलि दी। तिलासणी गॉव गोपालदास भाटी के अधिकार में था एक बार किरपो भाटी ने अपने साथियों को साथ लेकर तिलासणी के चारों और सुरक्षित वृक्षों को काटना प्रारम्भ कर दिया। इसकी सूचना मिलते ही विश्नोई लोगों ने इसका विरोध किया लेकिन ठाकुर के नहीं मानने पर उन्होंने अपने बलिदान से पेड़ों को बचाना उचित समझा। इस बलिदान को पील्होजी न तिलासणी की साखी में इस प्रकार व्यक्त किया है –

पहली मूंही खिवणी खड़ी सत सूं घणो करार
विष्णु भगत मोटो खड्यो, गुरू सूं हेत पियार
इंहि ऊपर नेतृ खड़ी, चाली जनम सुधार

वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण देने की जितनी भी घटनाएं विश्नोई समाज में मिलती है उनमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध व दिल दहलाने वाली घटना जोधपुर राज्य के खेजड़ी ग्राम की है जो कि **खेजडली के खंडाणे** के नाम से प्रसिद्ध है।

## राजस्थान के कोप में खेजड़ली

खेजड़ली राजस्थान, जोधपुर जिले से 26 किमी दक्षिण पूर्व में एक गॉव है यहॉ अत्यधिक मात्रा में खेजड़ी/सिनेरिया पेड़ है इसी लिये इसका नाम खेजडली पड़ा। यह विश्नोई गॉव था जिसमें हरे पेड़ काटना पूर्णतः निषिद्ध था जोधपुर के राजा अभयसिंह एक किला बनवाना चाहते थे और इसके लिये चूने की आवश्यकता थी चूना तैयार करने के लिए ईंधन की ओर ईंधन के लिए वृक्षों की आवश्यकता थी और महाराजा को यह

विदित था कि खेजड़ली गॉव में वृक्षों की संख्या पर्याप्त थी इसीलिए उन्होंने हाकिम गिरधरदास भण्डारी को वहॉ से ईंधन लाने का कार्य सौंपा। हाकिम भण्डार अपने कारिन्दों को लेकर खेजड़ी पहुॅचा और वृक्ष काटने का आदेश दे दिया। यह खबर सुनकर गॉव के विश्नोई लोग एकत्रित हुए और उन्होंने भण्डारी का विरोध किया भण्डारी ने वृक्षों के बदले धन की पेशकश की –

पण राखे तो पैसो देवो, दाखै गिरधरदास
लेकिन विश्नोईयों ने इसे धर्म विरूद्ध मानते हुए इस पेशकर को अस्वीकार कर दिया।
सिर सौंपारूंखा सटै, म्हें टुकड़ों न धां दाम
दाग लगै जो दाम दै, पेश मां पौणें होय।

हम वृक्षों के लिए अपना सिर कटवा देंगे पर रिश्वत देकर अपने धर्म को कलंकित नहीं होने देंगे। महाराजा ने तो यथास्थिति को स्वीकार कर लिया था लेकिन भण्डारी अपने अहं एवं वृक्ष काटने की जिद पर अडिग था बात ने तूल पकड़ लिया और खेजड़ली निवासी विश्नोईयों ने वृक्षों की रक्षा हेतु सिर सौंपने का निर्णय लिया। और अपने आस–पास के गॉवों में इसकी सूचना भेजी थी इस घटना में भी सबसे पहले बलिदान महिलाओं ने किया। इसके इमरती देवी/अमृता देवी का योगदान प्रमुख है। इन्हें जब पता चला कि भण्डारी उनके गॉव में पवित्र हरे खेजड़ी काट रहा है तो वह अपनी तीन बेटियों **आशु, रतनी, भागु बाई** के साथ घटना स्थल पर आकर पेड़ों के चिपक गई और उसने कहा हम अपना सिर देकर भी पेड़ों की रक्षा करेंगे। यदि एक पेड सिर की कीमत पर भी सहेजा जाता है तो यह इसके लायक है।

'सिर सांटे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण'

कारिन्दों ने किसी भी प्रकार की दया न दिखाते हुये उनके सिर धड से अलग कर दिये। यइ घटना 1730 ई. वि. सं. 1787 की भाइपद महिन की 10 तारीख मंगलवार की है। अमृता देवी के बाद दामी, देऊ एवं चीमा आदि अनेक स्त्रियों ने भी वृक्षों की रक्षा हेतु अपने जीवन का बलिदान किया। लेकिन इसके बाद भी भण्डारी शांत न हुआ उसने हरे पेड़ काटना जारी रखा। इनकी प्रेरणा से गॉव के अन्य स्त्री–पुरूष भी आगे आये और अपने प्रणों को न्यौछार किया। राजा के निर्दयी कर्मचारी पेड़ों से चिपके हुए लोगों पर प्रहार करते रहे और वृक्ष प्रेमी विश्नोई हॅसते–हॅसते बलिदान करते रहे। धरती खून एवं लाशों से भर गयी। राजा तक जब यह सूचना पहुची तो उसने तुरन्त घटना स्थल पर पहुॅच कर वृक्षों की कटाई रूकवा दी और पश्चाताप स्वरूप उन्होंने ताम्रपत्र पर राजाज्ञा की कि भविष्य में कोई भी विश्नोईयों के गॉवों में वृक्ष नहीं काटेगा। लेकिन अब तक 363 स्त्री–पुरूष शहीद हो चुके थे। इस घटना का उल्लेख गोकुल जी ने खेजड़ली की साखी में किया है।

इसी उद्देश्य से अनेक राजाओं ने विश्नोई गॉवों में वृक्ष न काटने के परवाने जारी कर दिये थे। इन घटनाओं के बाद किसी ने भी विश्नोई गॉवों में वृक्ष काटने व शिकार करे का प्रयास नहीं किया। इन्हीं आन्दोलनों से प्रेरणा पाकर भारत के अन्य क्षेत्रों में भी वृक्ष रक्षा हेतु आन्दोलन हुये। जैसे कि हिमालय का चिपको आन्दोलन – इस आन्दोलन में महिलाएं वृक्षों के चिपक जाती थी और वृक्षों को कटने से बचा लेती थी। दक्षिण भारत कर्नाटक का 'अधिको आन्दोलन'।

लेकिन इन सब के बावजुद भी पेड़ लगातार कट रहे थे पृथ्वी वृक्ष रहित हो रही है और इसका नकारात्मक प्रभाव भी मानव व जीवों को भुगतना पड़ रहा है। प्राकृतिक आपदायें बढ़ रही है। हमें यह याद रखना होगा कि Trees mean water, water means bread and bread is LIFE अर्थात् वृक्ष ही मानव का जीवन है।

अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिये और इनकी रक्षार्थ हेतु हर संभव प्रयास करने चाहिये। सम्भव हो तो विश्नोई आदर्शों को अपने जीवन में लागू करें। उन पेड़ों को प्राथमिकता दे जो मानव जीवन के लिए हर तरह से उपयोगी हो न की व्यवसायी दृष्टि से। ऐसे पेड़ लगाये जिनमें जल और मृदा संरक्षण की अधिकाधिक क्षमता हो, पेड़ ही रेगिस्तान के फैलाव को रोकने के साथ–साथ समाज को समृद्धि की ओर ले जाने का व्यवहारिक मार्ग है।

विश्व के प्रत्येक देश को विश्नोई आदर्श को अपनाने की आवश्यकता है और जीव–जन्तु व वृक्षों की रक्षा के लिये प्रत्येक देश को आगे आना होगा।

**Save the Forest and Save the Life.**

## संदर्भ ग्रन्थ


अग्रवाल डॉ. गीता रानी – धर्मशास्त्रों का समाज दश्नन, आदर्श विधा निकेतन वाराणी, 1983

चातक गोविन्द – पर्यावरण एवं संस्कृति का संकट, लक्षशिला प्रकाशन 2006

सहू बनवारी लाल – पर्यावरण संरक्षण एवं खेजड़ली बलिदान, बोध प्रकाशन, जयपुर 2002

रस्तोगी वन्दना – प्राचीन भारत में पर्यावरण चिन्तन

सिंघवी नन्दिता – वेदों में पर्यावरण चेतना

व्यास किसोरीलाल – भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण

दिवाकर बी.एम. – राजस्थान का इतिहास, अजमेर 1972

गहलोत सुखवीर सिंह – राजस्थान के रीति–रिवाज, राजस्थान साहित्य मन्दिर जोधपुर, 1976

औझा गौरीशंकर हीराचन्द – जोधपुर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

माहेश्वरी डॉ. हीरालाल – जाम्भोजी की शब्दवाणी

माहेश्वरी डॉ. हीरालाल – जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य

डॉ. विजय कुमार
सहायक आचार्य, स्व. पं. न. कि. श. राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा.


LBP PUBLICATION